देव संस्कृति विश्वविद्यालय

www.dsvv.acin

गीतामृतं

शारदीय नवरात्र

21 से 29 सितम्बर 2017

अधियज्ञः कथं कोऽत्र
देहेऽस्मिन्मधुसूदन?
"अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर"

अक्षर ब्रह्म योग

अधिभूत ब्रह्म अधिदैव
कर्म अध्यात्म अधियज्ञ
अधिभूत अन्त में भगवान
अधियज्ञ अधिदैव कर्म
अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधियज्ञ
अन्त में भगवान ब्रह्म
अध्यात्म अधिभूत कर्म
अधिदैव अधियज्ञ

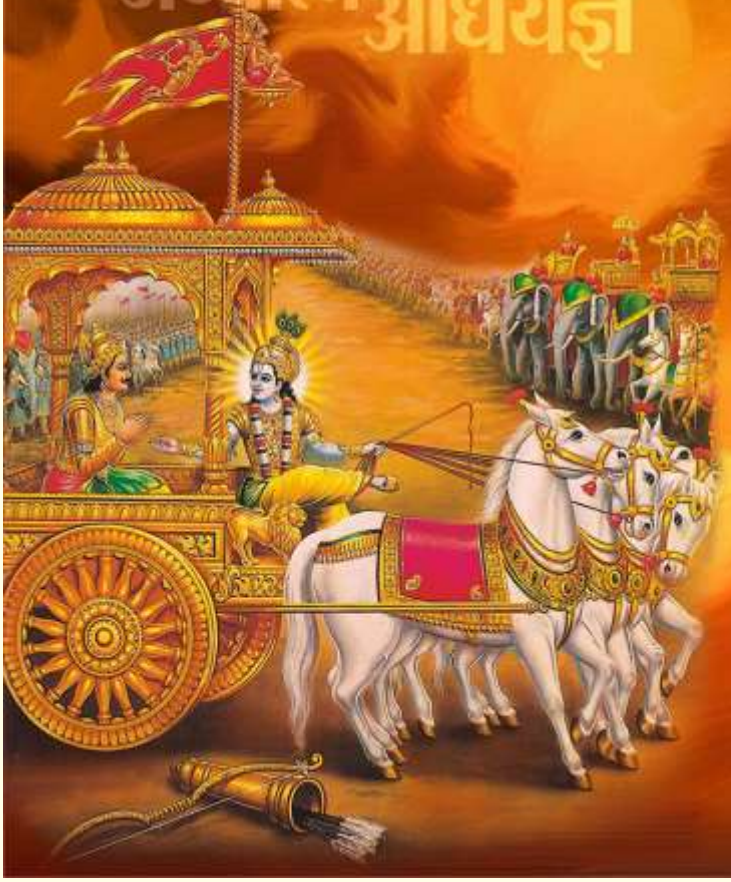

नवरात्रि सप्तम दिवस

27/09/2017

विशेष उद्बोधन-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विषय - अक्षर ब्रम्ह योग। (8वां अध्याय - श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन के पूछे सात प्रश्नों के उत्तर)

नवरात्र सप्तम दिवस: षष्ठम प्रश्न - अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन? उत्तर - "अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर"। (गीता 8/2 , 8/4)

- सांतवा दिन, छठवां प्रश्न- अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन?
- अधियज्ञ क्या है और आपकी काया में यह कहाँ स्थित है?
- अधि का मतलब होता है अतिविशिष्ट, असामान्य, Extra Ordinary.
- अधि से भूत है, अधि से दैव और अधि से यज्ञ।
- **सातवाँ दिन - कालरात्रि (महाकाली) का दिन। महाकाली तमस को भेदकर ऊपर आती हैं। महाकाली का जो स्वरूप है बड़ा विकराल रूप है। काली है पूरी की पूरी क्यों? क्योंकि अंदर से बाहर तक सारी की सारी चीजें नष्ट हो चुकी है। रजस-तमस जो बच गया है उसे महाकाली नष्ट कर देती है। मधुकेटप का वध करती हैं। महाकाली का गुण है तमस पर अंतिम प्रहार। हर संस्कार एक जन्म दे सकता है रक्तबीज की तरह। रक्तबीजों का क्षय करती है। चित की शुद्धि करती है और अविद्या पर अंतिम प्रहार करती है। कालरात्रि को सहस्त्रार में स्थित मानते हैं।**

- गीत - जिसके हों पद चिन्ह अमिट वह ही इतिहास सृजेता।
- जैसे कहा गया रजस-तमस जो बच गया उसे महाकाली नष्ट कर देती है। और अंतिम प्रहार रजोगुण पर करती है। रजोगुण हमें लालच की ओर ले जाता है और रजोगुण जरुरी भी है जीवन में कि हम कुछ हासिल करें, पाएं पर कुछ सेल करें पर रजोगुण से सुख की चाह बढ़ती है। और इसको समाप्त कर देती है कालरात्रि। हर संस्कार एक जन्म दे सकता है, रक्तबीज बन सकता है तो उनको कालरात्रि ही समाप्त करती है। रक्तबीज जो है असुरता के रूप में सारे विश्व में फैला हुआ है। इनका नाश करती है महाकाली।

विद्यार्थियों की जिज्ञासाएं एवं समाधान –

- लक्ष्य स्वयं के लिए होना चाहिए या दूसरों के लिए? - लक्ष्य स्वयं के लिए होना चाहिए। अपना लक्ष्य स्वयं तय करो। स्वामी विवेकानंद कहते हैं - "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" (कठोपनिषद), उठो, जागो और रुको मत जब तक लक्ष्य पर ना पहुंच जाओ। लक्ष्य आपको ही निर्धारित करना है।
- नंदी के कान में बात कहना और यह मानना कि मनोकामना पूरी हो जाएगी यह सत्य है या अंधविश्वास? - अंधविश्वास है। आप अपने अंदर के नंदी को बोलो जो आपके अंतकरण में बैठा है तो बात पता चलेगी और पूरी होगी।
- नादयोग करने का क्या कारण है? नादयोग का नाम नादयोग क्यों है? - नादयोग का मतलब है नाद अनुसंधान। सृष्टि में जो नाद है एक प्रकार से उसका हम अनुसंधान करते हैं। और विभिन्न प्रकार के नादों के माध्यम से हम एक ऐसी साधनात्मक प्रक्रिया को विकसित करते हैं जिससे कि हमारे को लाभ मिले, पूरे अंतरिक्ष को लाभ मिले, जीव जंतुओं को लाभ मिले। नाद योग मतलब नाद पर आधारित योग। और नाद किस-किस का होता है बाँसुरी और तबले का। दोनों एक साथ बजायी जाती है तब जाकर नादानुसंधान होता है।
- भावनाओं को परिष्कृत कैसे करें? - भावनाओं के परिष्कार के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि आप अच्छे काम करते हुए, अच्छी सद्भावना रखते हुए अपनी भावनाओं को विराट में घोल दें। जब तक आप विराट में अपने आप को घोलोगे नहीं और अपने आप

को उस विराट का एक अंग नहीं मानोगे तो अपने आप तक सीमित रहेंगे। लघु में महान, लघु में विराट! और उस विराट को मानते हुए कुछ न कुछ अच्छा करना है। (विराट = परमसत्ता)

- घर में चल रहे रीति रिवाजों, अंधविश्वासों से उनको मुक्त कराना है तो मुझे क्या करना चाहिए? - जैसे में क्लास ले रहा हूँ समझ रहा हूँ बातें आप सबको वैसे ही घर वालों को समझाना चाहिए। जैसे परमपूज्य गुरुदेव इस धरती पर आए और सभी को परम्पराओं, मूढ़ मान्यताओं और अंधविश्वासों से मुक्त कर दिया। कई रीति रिवाज ऐसे होते हैं जो शास्वत होते हैं पर कईयों की अब जरूरत नहीं। किताबों के माध्यम से समझाओ, किताब दो।
- सबसे सही से बात करना चाहते हैं पर न जाने क्यों सामने वाले की बातों से Irritate हो जाते हैं? - irritate होने से आपका आधा पक्ष खत्म हो जाता है। irritate होते ही आपका आधा स्वरुप खत्म हो गया। फिर आप जो बोलेंगे वह आधा बोलेंगे पूरा नहीं बोलेंगे। हम जवाब भी देते हैं पर उससे लोग हमें खडूस समझते हैं बहुत कम लोग ही बात करते हैं खुद को कैसे बदले? खुद को ऐसे बदलो की irritate न हो, प्रभावित न हो।
- जीविका और आजीविका में क्या अंतर है? - जीविका और आजीविका एक ही चीज है। अपने लिए जो कमाई जाए वह आजीविका है और जीविका वो जो सबके लिए कमाई जाय। जीविकोपार्जन इसलिए है।
- मृत्यु आने से पूर्व उसका पता कैसे लगाया जा सकता है? - मृत्यु आने जयपुर अगर उसका पता चल जाए तो आदमी बदल जाए। मृत्यु आने के पूर्व कई संकेत आते हैं कई तरह के जोड़ो में बीमारी, दृष्टि का मंद पड़ जाना, कान से कम सुनाई देना। पता चल जाता है कि अब आने वाला है। धीरे-धीरे इन्द्रियाँ कम होने लगती है। ये आने वाले समय के चिन्ह हैं।
- मनुष्य के जीवन में प्रेम का क्या महत्व है? मनुष्य के जीवन में प्रेम नहीं तो कुछ भी नहीं। प्रेम जो है अपनी आत्मा से करो, परमात्मा से करो, किसी से भी करो पर अपने आप से प्रेम करना सीखो। अपने आसपास के जीव मात्र से प्रेम करना सीखो। वृक्ष-वनस्पतियों से प्रेम करना सीखो। जीव जंतुओं से प्रेम करना सीखो।
- **Thank you so much for Navratri Classes it is very helpful for or life.**
- भक्ति के प्रकार कितने हैं? श्रेष्ठ भक्ति वह होती है जिसमें हम लोग भगवान की बात को जन-जन के बीच में सुनाते हैं। नवधा भक्ति है, **नौ तरह की भक्ति भगवान ने रामचरितमानस में शबरी को सुनाई है**। कई तरह की भक्ति है।

(काण्ड - अरण्यकाण्ड)

चौपाई -

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥4॥

भावार्थ - **मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर। पहली भक्ति है संतों का सत्संग। दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम॥4॥**

दोहा -

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥35॥

भावार्थ **- तीसरी भक्ति है अभिमानरहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें॥35॥**

चौपाई -

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा॥1॥

भावार्थ - **मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास- यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना॥1॥**

चौपाई -

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥2॥

भावार्थ - **सातवीं भक्ति है जगत् भर को समभाव से मुझमें ओतप्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाए, उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराए दोषों को न देखना॥2॥**

चौपाई -

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥3॥

भावार्थ - **नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना। इन नवों में से जिनके एक भी होती है, वह स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन कोई भी हो-॥3॥**

- किसी महापुरुष के लिए श्रद्धा हो और यदि कुछ गलत निकल जाए तो यह पाप है? हां ! पाप है। गलत नहीं निकलना चाहिए किसी के लिए भी चाहे वह महापुरुषों या और कोई किसी के लिए बुरा नहीं निकलना चाहिए। जबकि मन में उनके लिए बड़ी श्रद्धा है यह क्या है? चित्त के संस्कार, यह कारण है चित्त के संस्कार। अहंकार नहीं है तुम्हारा चित्त के कु-संस्कार होते हैं यही निकलते हैं। इस पाप के प्रायश्चित के लिए क्या करना चाहिए? - अपने आप को बदलना चाहिए धीरे-धीरे करके।
- प्रवचन, उपदेश व सत्संग में क्या समानता है? - प्रवचन तो वह है जो अपना ज्ञान बताने के लिए दिया जाता है। कई बार प्रवचन में बहुत अच्छे-अच्छे उदाहरण होते हैं जो प्रेरित करता है। कई बार प्रवचन इंसान को बदल देते हैं पूरी तरह से। उपदेश वह होते हैं जो बिना किसी प्रकार के लाग लपेट के कहे जाते हैं। जीवन को सही ढंग से जीना चाहिए बुद्ध ने उपदेश दिए और सिंपल सा उपदेश दिया उन्होंने बिल्कुल कहीं कोई लाग लपेट नहीं उपदेश में। सत्संग वह होता है कि संतो का संग , श्रेष्ठ पुरुषों का संग, उनकी संगति मिले। सत्संग जो है बड़ा दुर्लभ होता है। कैसे मिले? उसके लिए प्रयास करना चाहिए।
- किवदंतियां दंतकथाएं क्या है? - हमारे यहां पुराने जमाने से कई कथाएं चली आ रही है उनको किवदंतियां/दंतकथाएं कहते हैं अवाचीन काल से जीवन में कई कथाओं का महत्व है। इनके ऊपर एक इनसाइक्लोपीडिया है विश्व शब्दकोश है कई चीजें किवदंतियां बन जाती हैं।

विषय वस्तु सार-

- **आज अर्जुन का छठा प्रश्न है - "अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। " हे मधुसूदन! यहाँ अधियज्ञ क्या है? और वह इस शरीर में कैसे स्थित है? अधियज्ञ ऐसा कौन सा विशेष यज्ञ है जो देह में होता है?**
- **भगवान कहते हैं अपने बारे में। अभी तक तो अपने बारे में नहीं कहा था परंतु अब भगवान कहते हैं - "अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥"हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में मैं वासुदेव ही अन्तर्यामी रूप से अधियज्ञ हूँ।**
- **अस्तित्व के तीन आयाम हैं आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक।**
- **परसों (अधिभूत)- आधिभौतिक, कल(अधिदैव) - आधिदैविक और आज (अधियज्ञ) - आध्यात्मिक।**
- जे जो आध्यात्मिक है यह स्वरुप है भगवान का।
- **जो क्षरित होता है वह अधिभूत है। जो नौ द्वारों के पुर में स्थित पुरुष है वह अधिदैव है।**

- भगवान कहते हैं मैं ही अधियज्ञ हूँ। देह तो सभी धारण करते हैं परंतु देह धारियों में तुम श्रेष्ठ हो अर्जुन इसलिए गीता का उपदेश सुनने के लिए खड़े हो।
- जिस जीवात्मा के पास जितना कर्म है, जितना पुण्य है, जिसके पास जितने संचित कर्म है उसी के अनुसार सबको देह मिलती है।
- देह मिलेगी तो कहां मिलेगी तो भगवान गीता के छठवें अध्याय में कहते हैं जब अर्जुन पूछते हैं कि मेरा पुनर्जन्म कहाँ होगा। भगवान कहते हैं -

  श्लोक - प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥6/41॥

  भावार्थ - योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को अर्थात स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमान पुरुषों के घर में जन्म लेता है॥6/41॥

  श्लोक - अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्। एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्॥6/42॥

  भावार्थ - अथवा वैराग्यवान पुरुष उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान योगियों के ही कुल में जन्म लेता है, परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है, सो संसार में निःसंदेह अत्यन्त दुर्लभ है॥6/42॥

  श्लोक - पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते॥6/44॥

  भावार्थ - वह (यहाँ 'वह' शब्द से श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योगभ्रष्ट पुरुष समझना चाहिए।) श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योगभ्रष्ट पराधीन हुआ भी उस पहले के अभ्यास से ही निःसंदेह भगवान की ओर आकर्षित किया जाता है तथा समबुद्धि रूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लंघन कर जाता है॥6/44॥

  श्लोक - प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो यात परां गतिम्॥6/45॥

  भावार्थ - परन्तु प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कारबल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है॥6/45॥

  श्लोक - तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥6/46॥

  भावार्थ - योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्रज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करने वालों से भी योगी श्रेष्ठ है। इससे हे अर्जुन! तू योगी हो ॥6/46॥
- **योग - अपने आप से अपना योग कर लो।**
- भगवान कहते हैं कि प्रारब्ध के अनुसार, कर्म के अनुसार सभी को देह मिलती है। देह मिलने के बाद हम देह को ही आवरण का पहला चरण माल लेते हैं। हम देह के लिए सब करते हैं, सारा समान देह के लिए, सबकुछ हम देह के लिए करने लग जाते हैं। भरण, पोषण, रक्षा, सुरक्षा यह सब देह लिए।
- **दूसरा और तीसरा आयाम हमको समझ में ही नहीं आता पहले आयाम शरीर कोई सब कुछ मानकर हम बैठे जाते हैं। और न ही उसकी जिज्ञासा होती है।**
- **पहला आयाम शरीर, दूसरा आयाम - अधिदैव, तीसरा आयाम - अधियज्ञ।**
- **आध्यात्मिक आयाम सोचने वाले बहुत ही विरले होते हैं। क्यों? - क्योंकि वहां तक जा ही नहीं पाते। आधिभौतिक तक हमारी पहचान रहती है बस। आधिदैविक, आध्यात्मिक तक हम जाने का प्रयास नहीं करते।**
- आचार्य शंकर, विवेक चूड़ामणि में कहते हैं -

  जन्तूनां नरजन्म दुर्लभमतः पुंस्त्वं ततो विप्रता।

  तस्माद्वैदिक -धर्ममार्गपरता विद्वत्त्व मस्मात्परम।

  भावार्थ - जंतुओं में प्राणियों में मनुष्य का जीवन बड़ा दुर्लभ है। उसमे भी पुरुष के रूप में।

  (इसका मतलब यह नहीं कि नारी से उनको कोई एलर्जी जी। ऐसा नहीं है पुरुष नारी का भेद नहीं यहां पर। पुरुष से आचार्य शंकर का तात्पर्य है पुरुषत्व से है, जिनके अंदर पुरुषत्व हो। नारियों में भी पुरुषत्व होता है। देश में विभिन्न पदों में नारी शक्ति आज काम कर रही हैं। नारी शक्ति को कमजोर नहीं कहा जा रहा है। पर उस समय की जो मान्यता है उसके हिसाब से कहा जा रहा है। पुरुष

होना सौभाग्य है वह कहते हैं कि मीरा जब एक संत बनती है एक क्रांतिकारी कदम उठाती है तो पूरा का पूरा समाज खड़ा हो जाता है उनके पीछे ।) **पुरुष के रूप में जन्म उसमें भी ब्रम्हणत्व के संस्कार का होना । उसमे भी वैदिक धर्म में प्रवृति , उसमे भी शास्त्र के आत्म-अनात्म विचार रूपी तातपर्य का सम्यक ज्ञान,उसमे भी प्रत्यक्ष अनुभूति,उसमे भी ब्रह्म निरन्तर स्थिति - ये उत्तरोत्तर दुर्लभ हैं । इसप्रकार सैंकड़ों करोड़ जन्मों सत्कर्म रूपी पुण्यों बिना मुक्ति मिलती ।**

- ब्राम्हण जाति से नहीं कर्मों से ब्राम्हण ।
- वैदिक धर्म में चलने के बाद आचार्य शंकर कहते हैं विवेकचूड़ा मणि में -
  तीन दुर्लभ प्राप्तियां -
  दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रह - हेतुकम ।
  मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुष-संश्रयः ।
  अर्थात - मनुष्य शरीर जन्म , (आवागमन से) मोक्ष प्राप्ति की इच्छा (मुमुक्षा) और महापुरुषों संग -- ये तीनों चीज़ें अत्यंत दुर्लभ ईश्वर की कृपा से प्राप्त होतीं हैं ।
- ये तीन चीजें बड़ी दुर्लभ हैं - **मनुष्यत्वं(मनुष्य होने की जानकारी), मुमुक्षत्वं(ऊपर उठने की ललक, अभीप्सा ।** अंदर से जिज्ञासा हो कि हम क्या हैं? क्यों आये हैं धरती पर और क्या करना चाहते हैं?) और महापुरुष संश्रयः(महापुरुषों का आश्रय, ज्ञानी जनों का सानिध्य) ।
- अर्जुन के पास तीनों है मनुष्यत्व भी है, मुमुक्षत्व भी है और श्री कृष्ण जैसे महापुरुष का सानिध्य है । सच्चा इंसान है । केवल योद्धा हैं, महान धनुर्धर भी हैं पर श्रेष्ठता के कई मानदण्ड भी है ।
- धनुर्विद्या में अर्जुन के जैसा कोई नहीं था उसके जमाने में कई लोग थे ।
- धनुर्धारियों में श्रेष्ठतम परशुराम । उनके बाद उनके शिष्य पितामह भीष्म । उसके बाद द्रोणाचार्य जी उसके बाद अर्जुन उसके बाद अंगराज कर्ण ।
- अर्जुन की श्रेष्ठता यहीं तक सीमित नहीं है । अर्जुन देव पुत्र भी हैं । शस्त्र ज्ञानी के साथ-साथ शास्त्र ज्ञानी भी है ।
- **अर्जुन के प्रश्न बड़े गहरे हैं । सामान्य प्रश्न नहीं पूछते हैं अर्जुन । आम आदमी के जीवन में यह प्रश्न नहीं आएंगे । ब्रम्ह क्या है? अध्यात्म क्या है? ऐसे प्रश्न आये ।**
- जीवन समा जाता है इन सब प्रश्नों में । ऐसी जिज्ञासा होना बड़ा दुर्लभ है ।
- अर्जुन के अंदर सच्चे अर्थों में पुरुषत्व है अर्थात अर्जुन संवेदनशील है मन में गहरी संवेदना हैं । वह सामने वाले को पहले देखते हैं कि क्या यह वध के योग्य है? इसीलिए प्रश्न पूछ रहे हैं अर्जुन । क्या इनको मारा जाना चाहिए क्या यह सब ठीक हो रहा है? ऐसा प्रश्न कुरुक्षेत्र में केवल एक व्यक्ति के मन में आया और किसी के मन में नहीं वह थे अर्जुन । बस इसी के उत्तर में गीता कह दी गयी भगवान श्री कृष्ण द्वारा ।
- अर्जुन के मन में ये गहरे प्रश्न हैं - किं ब्रम्ह, किं अध्यात्मं, किं कर्मं, अधिभूतं च किं, अधिदैवं च किं, अधियज्ञमं च किं?
- **पहले तो पिण्ड को जानना पड़ेगा फिर हम ब्रम्हाण्ड को जान सकते हैं ।**
- आप देखिए डॉक्टर चिकित्सक कई सालों तक चिकित्सा पढ़ते रहते हैं । मेडिकल कॉलेज में आज भी एक पुरानी किताब चलती है हेनरी ग्रे की किताब Anatomy की । मनुष्य शरीर के एनाटॉमी को उन्होंने जाना अपने अध्ययन के द्वारा । उनके मन में जिज्ञासा थी जानने की मनुष्य संरचना को । मृत शरीर के ढांचें को चीर-फाड़कर देखते थे कहाँ क्या होता है और पूरा का पूरा लिखते थे नोट्स बनाते थे । बड़ी गहरी जिज्ञासा थी । मोमबत्ती के प्रकाश में पढ़ते थे । ह्यूमन एनाटॉमी(Human Anatomy) नाम की उन्होंने किताब लिखी । This is supposed to be most important entities of Indian scientific exploration. जिसमें पूरे मनुष्य शरीर की संरचना दी हुई है जो उन्होंने अध्ययन किया पाया वो सब है । आज मेडिकल कॉलेजों में उनकी किताबों के बारे में सबसे पहले पढ़ाया जाता है । मनुष्य शरीर की संरचना की जानकारी Henry Grey ने दी ।
- **ये वो शरीर है जो क्षरोभाव है अधिभूतं, पर इसके अंदर प्राण है । इसके अंदर जीवन है ।**

- **इसके बाद अधिदैविक ज्ञान आता है। कर्म और संस्कारों का ज्ञान अधिदैविक ज्ञान। इसका आना जरूरी है। अधिदैव जितने रूप लेता है उतने जीवन के दृश्य दिखाई देने लगते और न जाने कितने शरीर में हम भ्रमण करते हैं। अधिदैव मनुष्य शरीर में होता है।**
- इसके बाद - अधियज्ञ क्या है? भगवान कहते हैं ये अधियज्ञ मैं स्वयं हूँ। अधियज्ञ को जान लिए तो जीवन के गहराई को जान लोगे। जीवन के सत्य की अनुभूति होगी।
- कृष्ण जी का नाम यज्ञ पुरुष भी है। यज्ञपुरुष (अधियज्ञ स्वरूप)। यज्ञ को समझो। यज्ञ को समझ लिए तो जीवन को समझ लिए। सृष्टि का विज्ञान समझ लिया।
- **यज्ञ क्या है? कुण्ड होता है, तीन मेखलायें होती है, उस कुण्ड में आग जलती है। और स्वाहा के साथ आहुतियां डालते हैं। यज्ञ का पूजन करते हैं तो यज्ञ कुण्ड की मेखलाओं का पूजन करते हैं। ब्रम्हा, विष्णु और महेश के रूप में।**

- **हमारा शरीर भी एक यज्ञकुण्ड है। इसकी तीन मेखलायें हैं - देह(आधिभौतिक), प्राण(आधिदैविक) और मन (आध्यात्मिक)। जीवन यज्ञ में कर्मों की आहुति देते हैं। जो कर्म करते जाते हैं उन्हीं की आहुति - स्वाहा। इदम् नमं। नहीं ये मेरा नहीं है सबकुछ परमात्म को अर्पित। कर्म से चिपकना नहीं है। कर्म को भगवान को समर्पित कर दो।**
- **जो कर्म भगवान को समर्पित कर देते हैं वह दिव्य कर्म बन जाते हैं। कर्मों को दिव्य बना लो इदम् न मम् के भाव से।**
- **यज्ञ में आहुति कब देना चाहिए जब धुँआ न हो। धुँआ है तो उस समय आहुति मत डालो। जीवन में हमारे धुँआ हो जाता है। हम पुनः अग्नि को प्रज्वलित करते हैं।**
- **जीवन में ये धुँआ क्या है - हमारी कामनाएं, वासनाएं और तृष्णाएँ।**
- प्राणाग्नि में, धुंए(कामना/वासना) की वजह से यज्ञपुरुष तक आहुति नहीं पहुँचती है। जितने अहंता रहित कर्म होंगे उतने ही अग्नि बिना धुँए की प्रज्वलित होगी।
- गीता में भगवान कृष्ण ने अध्याय 3 और 4 में यज्ञ की व्याख्या की है।

  श्लोक-

  अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥3/14॥

  कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं "ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्"॥3/15॥

  भावार्थ - सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। कर्मसमुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर "परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है" ॥3/14-15॥
- यज्ञ बहुत बड़ी चीज है। पूरी सृष्टि में यज्ञ चल रहा है। यज्ञ हमेशा सृष्टि के लिए होता है। यह यज्ञ जीवन यज्ञ है।
- जब हमारे मन में कर्तापन का भाव नहीं होता, हमारे मन में कामनाएं वासनाएं नहीं घुली होती हैं तो अग्नि निर्धुम जलती है। तो जो कर्म होते हैं मैं से दूर हो जाते हैं इदम् न मम्। आहुति जाती है यज्ञपुरुष को।
- **हम यज्ञीय कर्म करें। भूदान यज्ञ नाम दिया विनोबा जी ने, नेत्रदान यज्ञ, अंगदान यज्ञ। जीवन विज्ञान को समझें। यज्ञ में जीवन विद्या है। यज्ञमय जीवन जियें।**
- यज्ञ उ देवानां अन्नः - यज्ञ देवताओं का अन्न है।
- हमारे शुभ कर्म और शुभ कर्मों की शुभता पूरे अखिल ब्रम्हाण्ड में अग्नि देव फैलाते हैं। यज्ञाग्नि देवताओं का मुख है, आहुति समर्पित अग्नि में करते हैं लेकिन मिलता समस्त देवताओं को है। इसके माध्यम से देवता पोषित होते हैं
- एक यज्ञ पिण्ड में चल रहा है, हमारे शरीर में चल रहा है और एक यज्ञ समस्त सृष्टि में चल रहा है। यत पिंडे तत ब्रम्हाण्डे। जो हमारे शरीर में चल रहा है वही ब्रम्हाण्ड में चल रहा है।

- **इसलिये वेद परिभाषित करते हैं यग्योयं भुवनस्य नाभि। यज्ञ सृष्टि के भुवनः की नाभि है।**
- पहला केंद्र नाभि। शरीर में इसके चारों तरफ सृष्टि की रचना है। पहला केंद्र नाभि है, नाभि प्राण है, नाभि के पीछे सूर्य चक्र है।
- आदिकाल में मनुष्य का पहला आविष्कार अग्नि है। जो चकमक पत्थर को आपस में रगड़ने से हुआ।
- उनका दूसरा आविष्कार गति था। एक चीज को गोल बनाकर चलाया तो पता चला गति के बारे में।
- ये अविष्कार विज्ञान का है पर मनुष्य द्वारा लाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है आग, अग्नि।
- तीनों मेखलाओं के बीच में जीवन की यज्ञीय प्रक्रिया का संवाद यज्ञ के माध्यम से चल रहा है।
- हमारे शरीर में कोई भी प्रणाली देखें nervous system देखें या और कोई भी system सब एक दूसरे पर निर्भर है। यज्ञीय system से जुड़े हुए हैं।
- गुरुदेव ने एक किताब लिखी हम सब एक दूसरे पर निर्भर।
- सभी एक दूसरे पर निर्भर है पिण्ड के अंदर भी और ब्रम्हाण्ड में भी।
- **कोई भी चीज ऐसी नहीं कि अलग हो। छोटी से छोटी कोशिका भी अलग नहीं।**
- **यज्ञ में आदान-प्रदान चलता है इसलिए यज्ञ के माध्यम से शरीर को स्वस्थ बनाते हैं।**
- यज्ञ संगतिकरण है। पंचप्राणों का आदान प्रदान है - प्राण, अपान, समान, उदान सबके बीच संवाद है। यज्ञ पंचमहाभूतों, पंचतन्मात्राओं, पंचकोशों के बीच में संवाद है। एक तत्व दूसरे तत्व से जुड़ा हुआ है।
- **जीवन का प्रशासकीय तंत्र है यज्ञ। Yagya is a Life System.**
- जिसके शरीर में प्रॉपर संवाद चलेगा वह पूर्णतः स्वस्थ होगा। स्वस्थ होने के लिए जीवन को यज्ञमय बनाएं। हे प्रभु जीवन हमारा यज्ञमय कर दीजिए।
- हमारे शरीर में जो संरचना वही इस सृष्टि में है। एक प्राणी का दूसरे प्राणी से संबंध है। बायोडायवर्सिटी है।
- **Story** - एक आइलैंड है। जहाँ पर सारे जीव जंतुओं को मार दिया गया तो वहां पर रहने वालों में तरह - तरह कि इतनी बीमारियां आगयी कि असाध्य बीमारी होगयी। डॉक्टर्स आये और वहां पर देखा। कि सारे जंतुओं को वहां मार डिय गया है।
- हर प्रजाति एक दूसरे पर निर्भर है। बायोडायवर्सिटी को जिन्दा रखना बहुत जरूरी है। बायोडायवर्सिटी को बनाये रखने के लिए Balance की जरूरत है। सबका एक दूसरे से संबंध है किसी एक को पूरा नही समाप्त किया जा सकता चाहे पेड़ हो या जंतु।
- सृष्टि में यज्ञ फैला हुआ है। सब Interdependent हैं।
- शास्त्र कहते हैं जो पिण्ड में है वह ब्रम्हाण्ड में है। हर एक में भगवान है।
- आज होलोग्राफी की बात हो रही है, सृष्टि की संपूर्णता को जानने की बात हो रही है, डीएनए की बात हो रही है। पूर्ण मिदं पूर्ण मिदः की बात आगयी। सब में पूर्णता है। हर चीज में पूर्णता है।
- **जो ब्रम्ह है वही अधियज्ञ है।**
- जब पुरुष संस्कारों, कर्म-बंधनों से मुक्त होता है तो वह अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय पाता है। तो वह अपने स्वरुप को जान जाता है।
- **अधिदैव है वही परिष्कृत रूप में मेरा स्वरूप प्राप्त कर लेता है।**
- **मैं स्वयं वासुदेव ही अधियज्ञ हूँ। प्रयेक प्राणी में में ही हूँ।**
- हमारे यहां एक गीत है - हर प्राणी में रूप तुम्हारा, पंकज सा मुस्काता, रवि मंडल में ज्योति तुम्हीं हो है गायत्री माता।
- बात ढूंढने की है अनुसंधान की है परत दर परत उसे खोजने की। मैं(परमात्मा)ही हूँ सर्वत्र
- **यज्ञ को परिभाषित किया गया तो कहा गया यज्ञ - दान, देव पूजन और संगतिकरण है।**

- **दान -** देने का भाव। देने के भाव के साथ दान। एक दूसरे को पोषित करने में विश्वास रखें। अमीर गरीब छोटा बड़ा सबको पोषित करने के भाव हों। दान का मतलब है संपन्नता, समृद्धि और साधन सबको प्राप्त हो सके। जो कुछ है हमारे पास उसका दान करें। गुरुदेव से दान को अपनाया अपने जीवन में जो कुछ था सबकुछ दे दिया। दान का सिद्धांत यह है कि वंचित वर्ग का पोषण होता रहे। यज्ञीय भाव हमारा जिंदा रहना चाहिए।
- **देव पूजन -** इसका मतलब होता है हमारे अंदर भी देवशक्ति है इसको पोषित करें। अधिदैव, अधियज्ञ हमारे अंदर है। अपने व्यक्तित्व को बढ़ाना/निखारना पहला धर्म है। यज्ञ के माध्यम से देवत्व का संवर्द्धन करें। जितना हो सके उतना करना चाहिए। कितना किये ये उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना यज्ञ के दर्शन को समझना है।
- **संगतिकरण -** संगतिकरण का मतलब समन्वय सबके बीच समन्वय। सबके बीच Coordination, संतुलन, जीवन के घटकों के बीच तालमेल। ऐसा नहीं होता है कि हम अकेले बैठकर यज्ञ में स्वाहा-स्वाहा कर ले हवन(व्यक्तिगत) और यज्ञ में अंतर है यज्ञ सामूहिक प्रक्रिया है। यज्ञ में यजमान होता है, आचार्य होते हैं, होता होते हैं, ध्वजु होते हैं, उद्गाता होते हैं। यज्ञ में सबका अपना Part होता है। सबके बीच में एक तालमेल होता है, एक सूत्र जुड़ा रहता है। सबकी चेतना जुड़ी रहती है। सब मिलकर ब्रम्हांडीय चेतना के लिए लगते हैं। दिखावा यज्ञ नहीं है भावना में भी यज्ञ है।
- **Story -** युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। बहुत लोगों को बुलाया गया। युधिष्ठिर के अंदर भाव आया अभिमान आया कि इस यज्ञ से लोगों का कल्याण हुआ और यह यज्ञ किसने किया मैंने किया।
- भगवान मैं शब्द के विरोधी हैं। चाहे सुर बोले, चाहे असुर बोले। यज्ञ का विरोधी शब्द है मैं।
- इदम् न मम् - यज्ञ ईश्वर की वजह से है। पर युधिष्ठिर ने कहां यज्ञ मेरे द्वारा हुआ है। तब भगवान ने सोचा कि यह तो यज्ञ में बाधा है। मैं में ही अटक गया है। तो मैं की वजह से भगवान ने लीला रची। बोले युधिष्ठिर देखो ये नेवला बड़ा विचित्र से दिखाई दे रहा है। आधे सोने का हो गया है और आधा जीवधारी है। युधिष्ठिर - ये कैसा है। भगवान कहते हैं चलो हम नेवले से ही चल कर पूछते हैं भगवान की कृपा से नेवले ने मनुष्य की वाणी में कहा- मैं प्रयास कर रहा हूँ...आधा तो सोने का हो गया हूँ जहाँ दान दिया गया था एक जगह यज्ञ में गया था दान दिया गया था। मैं इस यज्ञ में इसलिए आया कि जहां इतना बड़ा यज्ञ हो रहा है वहां स्वयं भगवान भी मौजूद है। पर यज्ञ में बाधा आयी, एक तरह से टोंट भी मारा है भगवान को की आपके रहते हुए भी महायज्ञ नहीं हो पाया बाधा आरही है। मेरा आधा बचा शरीर सोने का नहीं हो पाया बहुत देर से लोट रहा हूँ यहां। भगवान को तो सब पता था पर वह युधिष्ठिर को शिक्षण दे रहे हैं। तो उन्होंने पूछा किसने किया था यज्ञ तो नेवले ने कहा महर्षि मुद्गल ने यज्ञ किया था। एक बहुत बड़े तपस्वी के व्रत का अनुष्ठान पूरा हुआ तो उसके परायण में कुछ खा लेते हैं। उनके पास ज्यादा कुछ था नहीं। (पहले जो ब्राहमण होते थे शिलोच्य वृत्ति सिखाते थे। शिलोच्य वृत्ति - फसल कटने के बाद जो दाना नीचे गिर जाता था उसको इकट्ठा करके कहना। पसरा अन्न कहते हैं। गावों में फसलों की जब कटाई कर ली जाती है तो नीचे जो अन्न गिरता है उसमें ब्राम्हणों का अधिकार है फिर किसानों का अधिकार नहीं रहता। ब्राह्मण लोग किसी से मांगते नहीं थे वो अन्न बिन करके ले आते थे। अब तो किसान खुद ही बिन लाते हैं किसी के लिए नहीं।) ऋषि मुद्गल ने खूब सारा अन्न इकट्ठा किया हुआ था उस अनाज का सत्तू बनाया गया। सत्तू को बनाने के बाद सब घर के लोग उसको खाने के लिए तैयार हो गए इतने में ही व्यक्ति आया उसने कहा हम भी बड़े भूखे हैं हम भी आपका भोजन लेंगे। मुद्गल ने कहा अपनी पत्नी से कि तुम थोड़ा दे दो फिर उन्होंने अपना दे दिया। एक एक करके और आते गए। रूप बदल-बदल कर सब आते गए। बेटे ने भीबअपने हिस्से का दे दिया कहा हम जल में रह जाएंगे। इतने में जो लास्ट था उससे तीनों चारों का पेट भर सकता था इतने में एक चाण्डाल आ गया उसने कहा आप हमें दे दीजिये हमें बहुत भूख लगी है। आप सारा दे दीजिए। थोड़ा सा देने में गिर गया तो सत्तू के कण गिरे थे दान की वजह से भूमि में। नेवला

कहता है में वहीं लोटपोट हो गया। चाण्डाल के रूप में भगवान विष्णु आये थे और वो उस दंपत्ति को मुद्गल ऋषि को स्वर्ग लोग ले गए। तुमने महादान किया इसलिए स्वर्ग लेगये। नेवला - महाराज वहां तो मेरा शरीर सोने का होगया पर यहां पर नहीं हुआ।

- **यज्ञ, भावना है जीवन शैली है। Yagya is a Life Style.**
- **यज्ञ, जीवन में रखो, सोच में रखो। जीवन का संवर्द्धन करना है यज्ञ। यज्ञ में सबसे बड़ा बाधक है अहम।**
- **यज्ञपुरुष - पुरुषोत्तम।**
- **Story -** महाराज शिवा रायगढ़ में किला बनवा रहे थे उनके अंदर में एक भावा या कि मैंने यह किला बनवाया है जिसकी वजह से सारे के सारे मजदूर का भरण पोषण हो रहा है। इतने में समर्थ गुरु रामदास आ गए उन्होंने कहा अरे शिवा तुम इतना बड़ा किला बनवा रहे हो। महाराजा शिवा ने कहा हां महाराज सब आपकी कृपा है आपका आशीर्वाद है। इससे हम दूर-दूर तक निगरानी रख सकेंगे और मुगल लोका नहीं पाएंगे। पास में ही एक बड़ी सी पत्थर की शिला थी उन्होंने कहा तू इस शिला को तोड़वायेगा। तू इस शिला को तोड़वाकर देख तो उन्होंने कहा उसमें क्या बात है ? उन्होंने मजदूरों को बुलाया कहा मजदूरों हथौड़ा चलाओ इसपर। दो तीन हथौड़े चले फिर जैसे ही शिलाखण्ड टूटा उसमें से एक मेंढक उछलता हुआ आया। अंदर पानी भी रखा हुआ था। पानी भी था मेंढक भी था। गुरु बोले शिवा तुम कितने महान हो तुम्हारे किले के लिए जो शिला प्रयोग में आरही है उसके अंदर जो मेंढक है उसके लिए पानी की व्यवस्था कर रखी है। शिवा झुक गए बोले मुझे अपमानित मत करिए मैं क्षमा मांगता हूँ मैंने घमण्ड किया कि मैं पाल रहा हूँ। इसको तो आप पाल रहे हैं। परमात्मा पाल रहा है। शिवा को समझ गया था अहंकार।
- यज्ञ का मतलब होता है पुरुषोत्तम, जो पुरुषों में उत्तम है। जो सबका का भरण पोषण करते हैं।
- **Story -** एक भगवान का अनन्य भक्त था उसका नियम था किसी को भोजन करा कर ही भोजन करना। रोज किसी ना किसी को वह भोजन कराता था उसके बाद सोता था। पहले भगवान का पूजन करता सिर्फ अतिथि सत्कार करता भोजन कर आता था और फिर सोता था। एक दिन क्या हुआ कोई व्यक्ति आया ही नहीं सवेरे से शाम तक। उसने सोचा भगवान आज चाहते नहीं कि हम कुछ खाएं भूखे ही रह जाएंगे कोई बात नहीं बिना खाए सो जाएंगे। शाम को एक आदमी आया बोला भाई खाना मिलेगा। उसने कहा कि तुम सौभाग्य रूप में हमारे यहां आए हो सुबह से कोई नहीं आया था तो हम निराश हो गए थे आप आइए बैठिए उनको भोजन करने के लिए भोजन परोसा। उन्होंने कहा आप आचमन करिये भोजन करिए आप के बाद मैं भोजन कर लूंगा। आए हुए व्यक्ति ने पूछा आचमन किसका करें तो भगवान का भक्त बोला आचमन के माध्यम से ईश्वर का स्मरण करिए। अतिथि बोला भाड़ में जाये ईश्वर , ईश्वर तो हमें भूखा मरता है। हम ईश्वर को नहीं मानते याद नहीं करते। ठीक है मत खाओ खाना तुम जाओ हम आज भी भूखे राह लेंगे जो ईश्वर को नहीं मानता उसे हम भोजन नहीं कराते। फिर उस व्यक्ति को सपने में आराध्य मिले भगवान बोले मैं आया था आज तेरे पास और तूने मुझे बिना भोजन कराए ही भेज दिया। भगवान बोले उस व्यक्ति के रुप में मैं ही तो था हर व्यक्ति में यदि नारायण को नहीं देखोगे तो कैसे जिओगे। भगवान बोले जो आदमी जन्म से गाली दे रहा है हमें उसके लिए हम भोजन की व्यवस्था कर देते हैं और तू एक बार एक दिन भोजन नहीं करा सका। जब मुझे उसके न मानने का कोई फर्क नहीं पड़ता तो तुझे क्यों पड़ता है? थाली उसके सामने से हटा ली। वह भक्त उसके बाद में उसव्यक्ति को खोजता हुआ उसके पास पहुंचा फिर उसे भोजन कराया।
- **यज्ञ पुरुष सबका पालन पोषण करते हैं।**
- **ब्रम्ह सूत्र में एक सूत्र दिया गया तत् समन्वयात। उसका समन्वय करो।**
- यज्ञ ऐसी प्रक्रिया है जो सब जगह चल रही है नारायण भिन्न-भिन्न रूपों में हमारे शरीर में विद्यमान है।
- हमारी प्राणाग्नि में आहुति होती है। हमारी स्वासों में यज्ञ निरंतर चल रहा है। हर कोशिका में माईट्रोकौंड्रिया ऊर्जा बना रहा है। हर घटक में यज्ञ चल रहा है। पिंड में जो चल रहा है वही ब्रम्हाण्ड में चल रहा है।

- ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ यज्ञ नहीं चल रहा है हर जगह यज्ञ चल रहा है। यज्ञ की वजह से जिंदा है।
- नदियां समुद्र में आहुति देती है और बादल बनते हैं फिर बादल बनकर बरसते हैं और इसी में आते हैं। यह चक्र चलता आरहा है। पर्यावरण का चक्र।
- भगवद गीता में भगवान कहते हैं -

  श्लोक - यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

  भावार्थ - यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और जो पापी लोग अपना शरीर-पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं ॥3/13॥

  श्लोक-

  अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥3/14

  कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं "ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्"॥3/15

  भावार्थ - सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। कर्मसमुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर "परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है" ॥3/14-15॥
- यज्ञ में जो दिया जाता है वह 100 गुना होकर वापस मिलता है। निष्काम कर्म किया जाता है तो भगवान अनंत गुना होकर हमपर बरसते हैं।
- हमारे चरित्र, चिंतन और व्यवहार के बीच संवाद है यज्ञ। व्यवहार, विचार, भाव के बीच संतुलन यज्ञ।
- हमारे कर्म से अनेक लोग प्रभावित होते हैं जीवन के हर तल पर यज्ञ चल रहा है हमारे अंदर यदि हम अधिदैव, अधियज्ञ को समझ जाएं तो परमात्मा को प्राप्त हो जाएंगे।
- भगवान कहते हैं देह में तो मैं हूँ ही पर बात परिष्कार की है। **यज्ञीय भावना से आत्म परिष्कार चालू होगा और परिष्कार से अभ्युदय, लोककल्याण और आत्मकल्याण होता है।**
- इति अधियज्ञम्।

---------- ॐ शान्ति ----------

Watch Audio/Video Discourse of this class on YouTube.

Visit us on you tube – **shantikunjvideo**

www.awgp.org | **www.dsvv.ac.in**